कुछ अलग सी गिन्नी!

समीक्षा : शारून सनी

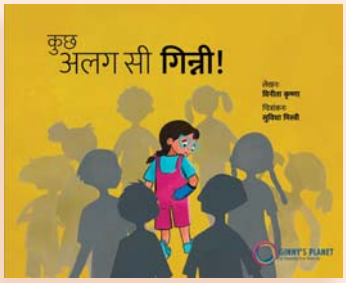

लेखिका : विनीता कृष्णा
चित्रकार : सुविधा मूर्ति
आयु वर्ग : 3 वर्ष और उससे अधिक
पृष्ठ संख्या : 20
भाषा : अँग्रेज़ी (हिन्दी में भी उपलब्ध)
प्रकाशक : गिन्नीज़ प्लैनेट प्राइवेट लिमिटेड

कुछ अलग सी ***गिन्नी!*** एक छोटी लड़की की दिल को छू लेने वाली कहानी है। यह लड़की अपनी शारीरिक भिन्नता को स्वीकार करती है, और आसपास के लोग भी उसे स्वीकार करते हैं। विनीता कृष्णा द्वारा लिखित और सुविधा मूर्ति द्वारा चित्रित यह कहानी आठ साल की गिन्नी की शारीरिक चुनौतियों का बारीक़ी से परिचय कराती है। यह पुस्तक हिन्दी से अनूदित है जिसका शीर्षक है *कुछ अलग सी गिन्नी।* गिन्नी का जन्म रेडियल क्लब हैंड के साथ हुआ था, और कुल मिलाकर, उसके दोनों हाथों में दस की बजाय नौ अंगुलियाँ हैं। मोटे चश्मे और कलाई के ब्रेस के साथ गिन्नी को ऐसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो शायद बेहद कठिन लगें। लेकिन अपनी ख़ुशमिजाज़ी और अनूठी प्रतिभा के कारण वह दूसरों से दोस्ती करने, और उन्हें ख़ुशी देने में सफल रहती है।

पुस्तक में, समावेशी वातावरण बनाने में समानुभूति, स्वीकृति और सौम्य हास्य की भूमिका को ख़ूबसूरती से दर्शाया गया है। गिन्नी की शारीरिक भिन्नताएँ दूसरों के साथ बातचीत करने या मेलजोल रखने में कोई बाधा नहीं डालती हैं। यह बात पाठकों के लिए एक बड़ी सीख है। पुस्तक के चित्र आकर्षक हैं, और पात्रों के मूड को शानदार ढंग से प्रकट करने में समर्थ हैं।

अपने हेयरबैंड के संग्रह के साथ ड्रेस-अप या सजने का खेल खेलने से लेकर क़ुतुब मीनार का मॉडल बनाने तक की हर बात में गिन्नी की रचनात्मकता और उत्साह झलकता है। वह अपने दोस्तों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करती है कि वे बारिश में खेलने का आनन्द लें। इससे यह ज़ाहिर होता है कि वह हर स्थिति में सकारात्मकता देखने में सक्षम है। बारिश में खेलते बच्चों का मनमोहक वर्णन, कल्पना की शक्ति और जीवन के सरल सुखों को अपनाने की ख़ुशी को उजागर करता है। कहानी सुनाने के बाद, शिक्षक अपनी बातचीत में यह तथ्य भी उजागर कर सकते हैं ताकि बच्चों को यह पहचानने में मदद मिल सके कि मौज़ मस्ती करना भी ज़रूरी है।

शिक्षक इस पुस्तक का उपयोग शारीरिक और सीखने सम्बन्धी अन्तरों के बारे में चर्चा शुरू करने के लिए कर सकते हैं। मसलन, आपको क्या लगता है कि गिन्नी दूसरों से शारीरिक रूप से अलग होने के बावजूद आत्मविश्वासी क्यों महसूस करती थी; या उसके दोस्तों ने उसे कैसे स्वीकार किया; आदि। ऐसे सवाल विद्यार्थियों को अपने स्वयं के अनुभवों और दृष्टिकोणों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। इससे बच्चों को यह समझने में भी मदद मिल सकती है कि हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो विविधताओं से भरी है, और यही विविधताएँ इस दुनिया को सुन्दर बनाती हैं। कक्षा में इस तरह की बातचीत से इस बारे में जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ेगी कि बच्चे और वयस्क इन विविधताओं से कैसे निपटते हैं।

वैसे तो इस पुस्तक के मुखपृष्ठ में यह सुझाया गया है कि यह तीन साल या उससे अधिक की आयु वाले बच्चों के लिए उपयुक्त है, लेकिन इसकी भाषा 6 साल और उससे अधिक आयु के बच्चों के लिए ज़्यादा उपयुक्त लगती है। कुछ शब्द, जैसे 'slight,' 'bent at an unusual angle,' and 'slung,' आदि छोटे बच्चों के लिए अपरिचित हो सकते हैं। इसके अलावा, हालाँकि शीर्षक और विवरण गिन्नी की शारीरिक भिन्नता का संकेत देते हैं, लेकिन अगर कहानी में इन शारीरिक चुनौतियों को और अधिक स्पष्ट किया जाता तो ज़्यादा अच्छा होता। एक दृश्य से दूसरे दृश्य की ओर जाते समय कुछ मसले भी नज़र आते हैं, इसलिए हो सकता है कि बच्चों को कहानी सुनाने से पहले शिक्षकों को विशेष तैयारी करनी पड़े ताकि वे उन्हें आसानी से समझ सकें। कुल मिलाकर, *कुछ अलग सी गिन्नी* दिल को छू लेने वाली और प्रेरक कहानी है जो वैयक्तिकता और स्वीकृति की शक्ति का जश्न मनाती है। यह ऐसे अभिभावकों और शिक्षकों के लिए एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है जो युवा पाठकों में दूसरों के प्रति सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देना चाहते हैं, ख़ासकर उन लोगों के लिए, जो शारीरिक तौर पर और सीखने की दृष्टि से अलग हैं।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

शारून सनी एक English Language Teaching (ELT) पेशेवर और शिक्षक प्रशिक्षक हैं। रचनात्मकता की शोधकर्ता और लेखन की शिक्षिका के रूप में, वे उस सूक्ष्म रेखा को खोजने की कोशिश करती हैं जो रचनात्मकता, प्रांजलता और सादगी को एक साथ लाती है। वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में पढ़ाती हैं।

चुस्कित स्कूल चली

समीक्षा : ध्रुवा देसाई

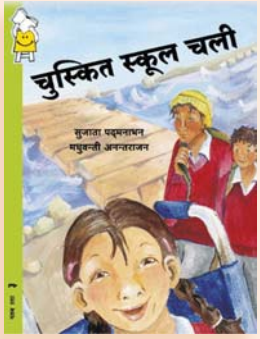

लेखिका : सुजाता पद्मनाभन

चित्रकार : मधुवन्ती अनन्तराजन

पृष्ठ : 22

भाषा : अँग्रेज़ी

प्रकाशक : स्टोरीवीवर, प्रथम बुक्स

चुस्कित स्कूल चली एक छोटी विकलांग लद्दाखी लड़की की कहानी है जो हमेशा से स्कूल जाना चाहती थी। उसके परिवार ने हर तरह से उसका साथ दिया है, और उसे पहियों वाली एक शानदार कुर्सी भी दिलवाई है। लेकिन स्कूल जाने का रास्ता ऐसा नहीं था जिसे वह अपनी पहिया कुर्सी पर बैठकर पार कर सके। रास्ता ऊबड़-खाबड़ और पथरीला था, और बीच में एक छोटा-सा नाला बहता था। इन कारणों से वह 9 साल की उम्र तक स्कूल नहीं जा पाई। एक दिन उसके गाँव का एक लड़का उससे स्कूल जाने के बारे में बात करता है। जब वह देखता है कि चुस्कित स्कूल जाने के लिए बहुत उत्सुक है तो वह चुस्कित को स्कूल भेजने का तरीक़ा खोजने लगता है और इस बारे में अपने प्रधानाध्यापक से बात करता है। इस कहानी की शुरुआत उस रोमांचक दिन से होती है जिस दिन चुस्कित स्कूल जा रही होती है।

इस पुस्तक की सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें लद्दाखी संस्कृति और भाषा के बारे में जानकारी मिलती है। पाठ में कई सामान्य शब्द और अभिवादन लद्दाखी भाषा में हैं, और अन्त में एक शब्दावली भी दी गई है। वैसे कहानी का सन्दर्भ इतनी अच्छी तरह से बताया गया है कि अपरिचित शब्दों के अर्थ निकालना मुश्किल नहीं है। इसके साथ ही, शानदार चित्र भी लद्दाखी जीवन की झलक दिखाते हैं। ये चीज़ें कहानी को बेहद स्पष्टता से चित्रित करती हैं, और लद्दाखी परिदृश्य, वास्तुकला एवं अन्य विवरण भी इतनी अच्छी तरह सामने रखती हैं कि पाठक बड़ी आसानी से उस माहौल की कल्पना कर पाते हैं।

इस कहानी का मुख्य विचार बड़े ध्यान से, और ईमानदारी के साथ पेश किया गया है। एक ओर, जहाँ पाठक चुस्कित और उसके परिवार के सदस्यों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जान पाते हैं, वहीं दूसरी ओर इसमें समावेशन का स्वर हर जगह मुखरित है। कहानी का लगभग हर पात्र, अधिक समावेशी समाज बनाने के लिए और विशेषतौर से चुस्कित के लिए समावेशन की दिशा में काम करता नज़र आता है।

ऐसे प्रयासों के ख़िलाफ़ कुछ आवाज़ें भी उठती हैं। ये आवाज़ें स्कूल के कुछ शिक्षकों की हैं जो (सभी समाजों की तरह) चुस्कित के स्कूल आने के ख़िलाफ़ नहीं हैं, लेकिन शायद वे उन प्रयासों को साकार करने के लिए आवश्यक कार्य की कल्पना करने या उसे करने में अनिच्छुक या असमर्थ हैं। कहानी में, इन पात्रों के ऐसे विचारों को बेहद मज़बूती से सम्बोधित किया गया है, और पुस्तक का कथानक शिक्षकों की आपत्तियों का जवाब देता है। इन सभी पहलुओं की वजह से यह पुस्तक विकलांगता, विविधता और समावेशन के सवालों से बच्चों को जोड़ने वाली एक अद्भुत पुस्तक बन जाती है। शिक्षकों और अभिभावकों में यह प्रवृत्ति देखने में आती है कि वे छोटे बच्चों के साथ 'उलझन-भरी' बातचीत से बचने की कोशिश करते हैं। हालाँकि, कभी-कभी वे भूल जाते हैं कि वे भी तो उसी दुनिया में रहते हैं। कक्षा में इस तरह की किताबें पढ़ने से इन विचारों को पेश करने और रोचक व मज़ेदार तरीक़ों से इस तरह की ज़रूरी बातचीत को शुरू करने में मदद मिलती है।

चुस्कित और उसका परिवार विकलांगता और विविधता के विचार को समझने में भी मदद करता है। वे ख़ुद पर दया करने वाले पात्र नहीं हैं, बल्कि वे तो ख़ुशमिजाज़ और बहुआयामी पात्र हैं जिनके लिए यह चुनौती वास्तविक होते हुए भी उनके जीवन का सिर्फ़ एक पहलू है। सभी अच्छी किताबों की तरह, यह पुस्तक भी पाठकों के लिए एक दर्पण और एक खिड़की, दोनों का काम करती है। यह पुस्तक एक नई और अलग दुनिया को प्रदर्शित करने के साथ ही उनकी दुनिया में परिचित चीज़ों के साथ सम्बन्ध भी रखती है।

कहीं-कहीं यह कहानी थोड़ी कठिन लग सकती है, जैसे जब चुस्कित का मित्र प्रधानाध्यापक से बात करता है, और उनके प्रयासों को 'नागरिकों के मौलिक अधिकारों' से जोड़ता है। लेकिन न तो यह बात कहानी से ध्यान हटाती है न ही कहानी के समाधान के वे जटिल पहलू कहानी से ध्यान हटा पाते हैं (जैसे नौकरशाही प्रक्रियाएँ), जिन्हें तेज़ी से आगे बढ़ाया गया है।

प्रथम बुक्स ने इस कहानी की पुस्तक को तीसरे स्तर के पाठकों के लिए सही माना है। यानी, ऐसे पाठक जो स्वतंत्र रूप से पढ़ सकते हैं। हमारे देश की कक्षाओं में भाषाओं की जटिलता होती है जिसके कारण समान रूप से स्तर बनाना मुश्किल होता है। यह कहानी छोटे बच्चों को भी पढ़कर सुनाई जा सकती है, और तब ये बच्चे शिक्षक / पुस्तकालयाध्यक्ष / अभिभावकों की मदद से निश्चित ही इस कहानी के साथ सार्थक रूप से जुड़ पाएँगे।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

ध्रुवा देसाई अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में शिक्षक-शिक्षा टीम के सदस्य हैं। अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में वे अपना अधिकांश समय या तो खेलने और शारीरिक शिक्षा के बारे में सोचने में बिताते हैं, या फिर बच्चों के साहित्य को पढ़ने और उसके बारे में सोचने में।

गप्पू नाच नहीं सकती

समीक्षा : निशा नाग

लेखिका : मेनका रमन
चित्रकार : कृष्णा चंद्रन
पृष्ठ संख्या : 13
भाषा : हिन्दी (अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध)
अनुवाद : पुरणेश कुमार त्रिपाठी
प्रकाशक : प्रथम बुक्स

बच्चों की दुनिया में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, जिन्हें 'स्पेशल चाइल्ड' कहते हैं, कैसे समाज में ग़ैर-बराबरी का स्थान पाते हैं, इससे हम सब वाक़िफ़ हैं। आमतौर पर यह माना जाता है कि विशिष्ट बच्चा या बच्ची वह है जो बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक या संवेगात्मक दृष्टि से सामान्य समझे जाने वाले बच्चों से इतना भिन्न होता है कि वह विद्यालय के नियमित कार्यक्रमों से पूरा लाभ नहीं उठा सकता। उसे विशेष कक्षा अथवा पूरक शिक्षण और सेवा की ज़रूरत होती है। समावेशी शिक्षा का मूल आधार ही समानता है। समानता का यह भाव तय करता है कि सभी विद्यार्थियों को उनकी योग्यता या अक्षमता के बावजूद सीखने और कक्षा की गतिविधियों में भाग लेने के समान अवसर मिलें। समावेशी शिक्षा पद्धति में विशिष्ट बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ बिना किसी भेदभाव के शिक्षा दी जाती है। यह अपेक्षा इस विचार का परिणाम है कि इस तरह के बच्चों को सामान्य बच्चों के बीच ही पलने-बढ़ने और शिक्षा पाने का अधिकार होना चाहिए, ताकि ये समाज से अलग-थलग और उससे जुदा महसूस न करें। यह पहल बेहतर समाज का मार्ग प्रशस्त करती है। इसके लिए महत्त्वपूर्ण है कक्षा की गतिविधियों में सभी बच्चों का समान रूप से भाग लेना। लेकिन यदि कोई विशेष बच्चा, जो बाएँ हाथ व पैर से मजबूर है, और कक्षा की गतिविधि में अध्यापिका जो कहें, ठीक उससे उलट करे तब क्या हो? कक्षा के दूसरे विद्यार्थियों के बीच उसका समावेशन किस तरह कराया जाए? *गप्पू नाच नहीं सकती* ऐसी ही परिस्थिति का सटीक जवाब है।

कक्षा में गप्पू एक ऐसी अस्थि विकलांग बालिका है जिसके बाएँ हाथ की हड्डियाँ, जोड़ और माँसपेशियाँ सुचारु रूप से कार्य नहीं कर पाती हैं।

गप्पू की सीमाओं को समझते हुए उसकी अध्यापिका अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को गप्पू के साथ तालमेल बैठाने के लिए कहती हैं। वह गप्पू की व्यक्तिगत भिन्नता को संसाधन की तरह इस्तेमाल करती हैं। अध्यापिका में समस्या-समाधान का कौशल है। बजाय इसके कि गप्पू अलग-थलग बनी रहे, अध्यापिका समस्या को सुलझाने के लिए अलग तरह से सोचती हैं। वे कक्षा को गप्पू के साथ तालमेल बैठाने को कहकर गप्पू का हौसला बढ़ाती हैं। गप्पू की आवश्यकता को महत्त्व देते हुए वह उसकी ज़रूरत के अनुसार उस नृत्य संरचना को भी बदल देती हैं जो विद्यार्थियों के साथ ही गप्पू में भी सामूहिक कार्य कुशलता को विकसित करने में सहायक होती है। अध्यापिका की इस पहल से दूसरे बच्चों में भी सकारात्मक सोच, स्वीकृति, धैर्य, सहनशीलता, मित्रता, आदि कौशलों का विकास होता है। गप्पू को कक्षा के साथ समेकित करने का अध्यापिका का यह प्रयास सीखने में समावेशन का एक अलग नज़रिया प्रस्तुत करता है।

कुल मिलाकर, 130 शब्दों की छोटी-सी चित्र कहानी की यह पुस्तिका समावेशन के लिए प्रयोगशीलता का एक उम्दा उदाहरण है। तालबद्ध शब्द संरचना इस कहानी की विशेषता है। इस कहानी को टटोलते हुए गप्पू की कक्षा का पूरा दृश्य आँखों के सामने उभर आता है। अध्यापिका बच्चों को निर्देश देती हैं– "तक धिमि तई / अपने बाएँ हाथ को ऊपर उठाएँ!"

"ओ हो! गप्पू अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाती है। गप्पू नाच नहीं सकती!" दूसरी शारीरिक क्रियाओं के साथ 'गप्पू नाच नहीं सकती' वाक्य कहानी में तीन बार और आता है। इसी तरह, जब बच्चों को तेज़ी से घूमने का निर्देश दिया जाता है, गप्पू बहुत धीमे घूमती है। इसका कारण उसकी अपनी सीमाएँ हैं। "टप टपाटप टप, सब कूदो झटपट" का निर्देश मिलने पर गप्पू बैठ जाती है, और दाहिना पैर अन्दर करने के निर्देश पर वह उसे बाहर निकालती है। निर्देशों के विपरीत, गप्पू के ग़लत स्टेप करने पर सभी बच्चे उसकी ओर

इशारा करते हुए हँसते हैं। यह देखकर अध्यापिका अपने निर्देश बदल देती हैं, और कहती हैं, "तक धिमि तई / कुछ बच्चे हाथ नीचे और कुछ ऊपर रखो भई।" वह घूमने के निर्देश को भी बदलकर कहती हैं, "पूरे कमरे में तेज़ और धीमे कूद या जैसा मन हो वैसे कूद झटपट। बस हो जाओ शामिल सोचे बिना।" इसका नतीजा यह होता है कि गप्पू अब नाच सकती है क्योंकि अब उसे सँकरी सीमाओं में बँधकर नहीं नाचना। इस युक्ति का श्रेय अध्यापिका को जाता है। इसके साथ ही, अध्यापिका यह सन्देश भी देती हैं कि किस तरह कक्षा में विशेष बच्चों का समावेशन किया जा सकता है।

तेरह पृष्ठों की इस छोटी-सी पुस्तिका की छपाई आकर्षक है। आवरण और भीतरी चित्र बरबस ही ध्यान खींच लेते हैं। पुस्तक के चित्रांकन की विशेषता उसका रंग संयोजन है, अध्यापिका की मुद्राएँ और बच्चों की आँखें विशेषतौर पर ध्यान खींचती हैं क्योंकि उनमें झाँकता आश्चर्य और कौतूहल मानो बचपन को साकार कर देता है। पुस्तक पठनीय ही नहीं, गतिविधियों को संयोजित कराने वाली भी है।

इस पुस्तिका में, एक और सन्देश भी समाया हुआ है कि बच्चों की सीखने की शृंखला में कुछ भी ग़लत नहीं होता। बँधी-बँधाई परिपाटी से अलग, बच्चे दूसरी क्रियाओं द्वारा भी बहुत कुछ सीखते हैं।

निशा नाग मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय में वरिष्ठ प्रवक्ता हैं, जहाँ वे 26 वर्षों से अध्यापन कर रही हैं। विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं में आपकी समीक्षाएँ, लेख व कहानियाँ प्रकाशित होती रहती हैं।

उत्तराखण्ड के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय की कक्षा में सजी कहानी की किताबें

सामाजिक सम्बन्धों, नैतिक विकल्पों, भावनाओं को समझने एवं अनुभव करने और जीवन कौशल के बारे में जागरूक होने के लिए कहानियाँ विशेष रूप से एक अच्छा माध्यम हैं। कहानियाँ सुनते समय, बच्चे नए शब्द सीखते हैं, इस प्रकार उनकी शब्दावली, वाक्य संरचना और समस्या-समाधान कौशल का विस्तार होता है। बहुत कम ध्यान अवधि वाले बच्चे कहानी में तल्लीन होने पर लम्बे समय तक ध्यान केन्द्रित करते हैं। *(1.5.2.2. STORYTELLING, NCF-SE-2023)*